



॥ श्री देवउठनी (प्रबोधिनी)

एकादशी व्रत कथा ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री देवउठनी (प्रबोधिनी) एकादशी व्रत कथा ॥

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की देवउठनी एकादशी को प्रबोधिनी एकादशी, देवोत्थान एकादशी, देवउठनी ग्यारस तथा उत्थान एकादशी भी कहा जाता है। यह भगवान श्रीहरि विष्णु को अत्यंत प्रिय है। इसी दिन भगवान विष्णु चार माह की योगनिद्रा (चातुर्मास) के पश्चात जागृत होते हैं। इस दिन से विवाह, गृहप्रवेश तथा अन्य मांगलिक कार्य पुनः आरम्भ होते हैं।

इस एकादशी का माहात्म्य पद्म पुराण तथा स्कन्द पुराण में वर्णित है।

श्री देवउठनी (प्रबोधिनी) एकादशी व्रत कथा

एक समय धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा—

"हे जनार्दन! कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का क्या नाम है?

उसका माहात्म्य और व्रत कथा कृपया बताइए।"

भगवान श्रीकृष्ण बोले—

"हे राजन्! यह एकादशी 'प्रबोधिनी' अथवा 'देवोत्थान एकादशी' कहलाती है। इसका व्रत समस्त पापों का नाश करने वाला और मोक्ष प्रदान करने वाला है। अब इसकी पावन कथा सुनो।"

प्राचीन काल में एक धर्मात्मा राजा राज्य करता था। वह भगवान श्रीहरि विष्णु का परम भक्त था और अपने पूरे राज्य में एकादशी व्रत का विशेष पालन करवाता था।

राजा ने यह नियम बनाया था कि एकादशी के दिन पूरे राज्य में कोई भी व्यक्ति अन्न ग्रहण नहीं करेगा। सभी लोग भगवान विष्णु की पूजा, भजन और उपवास करेंगे।

एक बार भगवान श्रीविष्णु ने राजा की भक्ति की परीक्षा लेने का निश्चय किया। वे अत्यंत रूपवती कन्या का रूप धारण करके राजा के सामने

प्रकट हुए।

राजा उस कन्या के अद्भुत रूप को देखकर आश्चर्यचकित रह गया। उसने उससे विवाह का प्रस्ताव रखा।

कन्या ने कहा—

"राजन्! मैं आपसे विवाह कर सकती हूँ, लेकिन मेरी एक शर्त है। आपको मेरी हर बात माननी होगी। यदि आपने मेरी किसी बात का उल्लंघन किया, तो मैं आपको छोड़कर चली जाऊँगी।"

राजा ने उसकी शर्त स्वीकार कर ली और दोनों का विवाह हो गया। कुछ समय बाद कार्तिक शुक्ल एकादशी का दिन आया। राजा ने एकादशी का व्रत रखा और पूरे राज्य में उपवास का आदेश दिया।

तब रानी ने राजा से कहा—

"आज मेरे लिए अन्न सहित स्वादिष्ट भोजन बनवाइए। यदि आपने मेरी बात नहीं मानी, तो मैं आपको छोड़कर चली जाऊँगी।"

राजा धर्मसंकट में पड़ गया। एक ओर पत्नी की शर्त थी और दूसरी ओर भगवान विष्णु का प्रिय एकादशी व्रत।

अंततः राजा ने निश्चय किया कि वह भगवान की आज्ञा और धर्म का पालन करेगा। उसने एकादशी का व्रत नहीं छोड़ा।

राजा की अटल भक्ति और धर्मनिष्ठा देखकर वह रूपवती स्त्री अपने वास्तविक स्वरूप में प्रकट हुई। वह स्वयं भगवान श्रीहरि विष्णु थे।

भगवान विष्णु ने प्रसन्न होकर कहा—

"हे राजन्! मैंने तुम्हारी भक्ति और धर्मनिष्ठा की परीक्षा ली थी। तुम उसमें सफल हुए। जो श्रद्धा और नियमपूर्वक प्रबोधिनी एकादशी का व्रत करेगा, उसके सभी पाप नष्ट होंगे और अंत में वह मेरे परम धाम वैकुण्ठ को प्राप्त होगा।"

भगवान के वरदान से राजा और उसकी प्रजा सुखी हुई तथा अंत में सभी को भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त हुई।

देवउठनी (प्रबोधिनी) एकादशी का महत्व

इस दिन भगवान श्रीविष्णु चार माह की योगनिद्रा के बाद जागृत होते हैं।

चातुर्मास का समापन इसी तिथि को होता है।

इस दिन तुलसी-शालिग्राम विवाह का आयोजन किया जाता है।

विवाह, गृहप्रवेश, यज्ञोपवीत, मुंडन आदि मांगलिक कार्य पुनः प्रारम्भ होते हैं।

भगवान विष्णु, माता लक्ष्मी, तुलसी एवं शालिग्राम की पूजा का विशेष महत्व है।

कथा का संदेश

धर्म और ईश्वर-भक्ति के मार्ग पर दृढ़ रहने वाला व्यक्ति सदैव भगवान की कृपा प्राप्त करता है।

एकादशी का व्रत केवल उपवास नहीं, बल्कि आत्मसंयम, सत्य और भक्ति का पर्व है।

भगवान अपने भक्तों की श्रद्धा और निष्ठा की परीक्षा लेते हैं, परंतु अंततः उनकी रक्षा भी करते हैं।

भगवान के प्रति अटूट विश्वास जीवन के सभी संकटों को दूर करता है।

देवउठनी (प्रबोधिनी) एकादशी व्रत का फल

जो श्रद्धालु कार्तिक शुक्ल पक्ष की देवउठनी (प्रबोधिनी) एकादशी का श्रद्धापूर्वक व्रत रखकर भगवान श्रीहरि विष्णु, माता लक्ष्मी एवं तुलसी जी की पूजा करता है, उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, परिवार में सुख-समृद्धि आती है, मांगलिक कार्यों में सफलता मिलती है तथा अंत में भगवान विष्णु के परम धाम वैकुण्ठ की प्राप्ति होती है।

॥ श्री विष्णवे नमः ॥

॥ श्री देवउठनी (प्रबोधिनी) एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥